② गुण स्वर संधि-

अ | आ + इ | ई = ए
अ | आ + उ | ऊ = ओ
अ | आ + ऋ = अर्

यदि अ | आ के बाद असमान स्वर 'इ | ई' आ जाए तो 'ए' हो जाता है, और यदि अ | आ के बाद असमान स्वर 'उ | ऊ' आ जाए तो 'ओ' हो जाता है, तथा अ | आ के बाद असमान स्वर 'ऋ' आ जाए तो 'अर्' हो जाता है-

जैसे- महा + इन्द्र - महेन्द्र, पर + उपकार - परोपकार, सप्त + ऋषि - सप्तर्षि

'अ|आ+इ|ई-ए'

भारत+इंदु - भारतेंदु, विवाह+इतर - विवाहेतर

ए

ए

भोजन+इच्छुक - भोजनेच्छुक, अंत्य+इष्टि - अंत्येष्टि

ए

ए

यथेष्ट - यथा+इष्ट, जितेन्द्रिय - जित+इंद्रिय

ए

ए

साहित्येतर - साहित्य+इतर

ए

'अ + ई - ए'

तप + ईश्वर - तपेश्वर, अंक + ईक्षण - अंकेक्षण

ए

गोप + ईश्वर - गोपेश्वर, गण + ईश - गणेश

ए

भुवनेश्वर - भुवन + ईश्वर, अपेक्षा - अप + ईक्षा

ए

प्रेक्षा - प्र + ईक्षा

'आ + इ = ए'

महा + इन्द्र - महेन्द्र, यथा + इष्ट - यथेष्ट

ए ए

रसना + इंद्रिय - रसेन्द्रिय, सुधा + इन्दु - सुधेन्दु

ए ए

यथा + इच्छा - यथेच्छा, राजेन्द्र - राजा + इन्द्र

राकेन्दु - राका + इंदु

ए

'आ + ई = ए'

गंगा + ईश्वर – गंगेश्वर, महा + ईश्वर – महेश्वर

ए ए

अलका + ईश – अलकेश, द्वारका + ईश – द्वारकेश

ए ए

कमलेश – कमला + ईश, गुडाकेश – गुडाका + ईश

ए ए

लंकेश्वर – लंका + ईश्वर

ए

'अ|आ + उ|ऊ - ओ'

पर + उपकार - परोपकार, सर्व + उपयोगी - सर्वोपयोगी

ओ ओ

उत्तरोत्तर - उत्तर + उत्तर, अंत्योदय - अंत्य + उदय

ओ ओ

आनंदोत्कर्ष - आनंद + उत्कर्ष, कठोपनिषद् - कठ + उपनिषद्

ओ ओ

अन्योदर - अन्य + उदर

ओ

'आ + उ - ओ'

गंगा + उदक - गंगोदक, यथा + उचित - यथोचित

ओ ओ

महा + उत्सव - महोत्सव, हर्ष + उल्लास - हर्षोल्लास

ओ ओ

होलिकोत्सव - होलिका + उत्सव, गंगोपाध्याय - गंगा + उपाध्याय

ओ ओ

करुणोत्पादक - करुणा + उत्पादक

ओ

'अ + ऊ - ओ'

जल + ऊर्मि - जलोर्मि, नव + ऊढ़ा - नवोढ़ा

ओ ओ

सूर्य + ऊष्मा - सूर्योष्मा, उच्च + ऊर्ध्व - उच्चोर्ध्व

ओ ओ

समुद्रोर्मि - समुद्र + ऊर्मि, जलोर्मि - जल + ऊर्मि

ओ ओ

'आ+ऊ-ओ'

गंगा+ऊर्मि-गंगोर्मि, सरिता+ऊर्मि-सरितोर्मि

ओ ओ

महा+ऊर्जा-महोर्जा, महोर्ध्व-महा+ऊर्ध्व

ओ ओ

यमुनोर्मि-यमुना+ऊर्मि, महोर्मि-महा+ऊर्मि

ओ ओ

महोष्मा-महा+ऊष्मा

ओ